A TRAINING PROGRAMME ON "ECO-RESTORATION OF WASTELANDS" ORGANIZED BY THE HFRI, SHIMLA FROM 15TH TO 17TH DECEMBER, 2016

A three days training on "**Eco-restoration of Wastelands**" was organized by the Himalayan Forest Research Institute, Shimla from 15th to 17th December, 2016. Twenty participants representing the Himachal Pradesh Forest Department, Educational Institutions, Rural Development and Research Institutes attended this training programme which was, aimed at sensitization and awareness generation amongst the various stakeholders about the problem of wastelands and their Eco-restoration techniques.

Dr. V.P. Tewari, Director of the Institute inaugurated the training programme on 15th December, 2016. Addressing the participants, he explicitly highlighted the intent behind this training programme. He further elaborated about the impending problem of the Wastelands at Global, National and Regional levels and called upon the participants to understand the gravity of the problem and make all possible endeavours to combat desertification which is fast engulfing the fertile landmass. He reaffirmed the commitment of the institute to tackle the forestry related issues, in general and eco-rehabilitation of wastelands in particular.

Dr. R.K. Verma, Coordinator of the training programme informed the participants that during the programme different resource persons and experts will apprise and provide in depth knowledge about the land resources and management & mitigation techniques employed for eco-restoration of wastelands. He informed that excursion visit to Western Himalayan Temperate Arboretum of the Institute at Potter's Hills and Model Nursery, Baragaon will also be organized.

Thereafter, on the inaugural day of the training, Dr. K.S. Kapoor, GCR gave a brief and pointed presentation about the history of Himalayan Forest Research Institute and the main mandate of this Institute. During this, he also apprised the participants about the scenario of wastelands in the state of Himachal Pradesh and explained the causes for the same and stressed upon the dire need for the restoration of the degraded areas.

The resource persons from the institute shared their technical knowhow and scientific knowledge about

the multiple aspects of the wastelands and remedial measures for ecorestoration of such degraded lands. The in-house interactional session with the participants covered the issues under the ambit of

nursery preparation of prominent and potential bio-engineering plant species, landscaping of the degraded sites with the local shrub species, Plantation techniques of multipurpose tree like Paulowania and

management and control of the different insect-pests of nursery and plantation. The wide spectrum of medicinal plants with reference to Himachal Pradesh was specially dwelled upon by the resource persons. The heterogenous group of the trainees showed very keen interest in the interactions and clarified their doubts by putting queries.

On the second day, the participants were taken on a field trip to **Western Himalayan Temperate Arboretum**, a venture of the institute at Potter's Hill, Shimla. This outdoor visit was envisaged to provide the participants a tangible and thrilling touch with the nature. All the participants were delightful and expressed that this sort of realistic interaction with the nature is more concrete and everlasting.

On the last day of the training, Dr. Rajesh Sharma, Dr, Sandeep Sharma, Dr. Jagdish Singh, Dr. Ranjeet

Kumar, Dr., Pawan Rana and Dr. Vaneet Jishtu, Scientists from HFRI, Shimla gave elaborated and illustrative presentations on multiple aspects on **Eco-restoration of Wastelands.** After that the participants visited the different laboratories and

Herbarium of the institutes where useful information about the Ultra Modern Scientific Equipments were given by the concerned Laboratory Incharge.

During the plenary session of the programme, Dr. V.P. Tewari, Director of the Institute shared his views with the participants once again and thanked all the participants for giving their valuable time and

making this programme successful. He inferred that the issue of the wastelands is so vast and comprehensive that a three day's programme cannot address all the aspects, but it must have started the thought provoking process in tackling the problem of wastelands. He also distributed the certificates of participation to all the participants.

A feedback form was also filled up by the participants of the training programme which provided the valuable and important suggestions in futuristic research training programmes. All the participants opined the worth of this training programme and admired the efforts of the organizers for providing awareness about a very relevant and useful topic.

GLIMPSES OF THE TRAINING PROGRAMME

****

PRINT MEDIA COVERAGE

पंजाब केसरी: 16 दिसम्बर, 2016

भयावह रूप धारण कर चुकी बंजर भूमि की समस्या

प्रशिक्षण कार्यक्रम में शोध कार्य नीतियों पर प्रकाश डाला

शिमला, 15 दिसम्बर (राक्टा): विकासात्मक गतिविधियों तथा अन्य सहयोगी गतिविधियों के कारण भूमि संसाधन पर अत्यधिक दवाब बढ़ा है तथा वर्तमान में बंजर भूमि की समस्या वैश्विक तथा स्थानीय स्तर पर एक भयावह रूप धारण कर चुकी है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में आयोजित 3 दिवसीय कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. वी.पी. तिवारी ने यह बात कही। इस दौरान उन्होंने प्रतिभागियों को इस अवसर पर कुछ आंकड़ों से भी अवगत करवाया।

उन्होंने वानिकी क्षेत्र में संस्थान की गतिविधियों को भी चिन्हित किया। बंजर भूमि पारिस्थितिक पुनर्स्थापन विषय पर आयोजित 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश सरकार के प्रमुख विभागों जैसे शिक्षण संस्थानों, वन विभाग तथा ग्रामीण विकास सहित अन्य विभागों से लगभग 20 प्रशिक्षणार्थी हिस्सा ले रहे हैं। संस्थान द्वारा यह प्रशिक्षण कार्यक्रम बंजर भूमि पारिस्थितिक पुनर्स्थापन के विषय में संप्रेषण तथा आधारभूत, मौलिक एवं नवीनतम जानकारी उपलब्ध करने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान संस्थान के समूह समन्वयक अनुसंधान डा. के.एस. कपूर ने सार्गिक एवं जानकारी उपलब्ध करवाई तथा प्रमुख शोध कार्य नीतियों एवं गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

क्षेत्रीय भ्रमण पर ले जाएंगे पॉटरहिल

अपने संबोधन में प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डा. आर.के. वर्मा ने जानकारी दी कि संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विविध विषय विशेषज्ञों द्वारा संबंधित विषय पर तकनीकी एवं वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध करवाई जाएगी तथा क्षेत्रीय भ्रमण के लिए पॉटरहिल भी ले जाया जाएगा।

हिमाचल दस्तक: 16 दिसम्बर, 2016

बंजर भूमि को सुधारने पर मंथन शुरू

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में बंजर भूमि को सुधारने के लिए दो दिवसीय कार्यशाला शुरू हुई। वीरवार को संस्थान में कार्यशाला का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने किया। इस अवसर पर प्रतिभागियों से डॉ. तिवारी ने कहा कि विकासात्मक गतिविधियों तथा अन्य सहयोगी गतिविधियों के कारण भूमि संसाधन पर अत्याधिक दवाब बढ़ा है। वर्तमान में बंजर भूमि की समस्या वैश्विक रूप धारण कर चुकी है। इस कार्यशाला में 20 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।

दैनिक भास्कर दिसम्बर 18, 2016

बंजर भूमि का पुनःस्थापन बताया

एचएफआरआई में प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न,20 प्रशिक्षणार्थियों ने लिया हिस्सा

सिटी रिपोर्टर | शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से बंजर भूमि की पुनःस्थापन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन शनिवार को हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश सरकार के प्रमुख विभागों जैसे शिक्षण संस्थानों, वन विभाग तथा ग्रामीण विकास इत्यादि से लगभग 20 प्रशिक्षणार्थियों भाग लिया। इस आयोजन के प्रथम दिवस 15 दिसंबर को संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम से संबंधित व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. आरके वर्मा ने आरंभ में कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को सरल प्रस्तुतिकरण के माध्यम से विविध प्रकार की वैज्ञानिक जानकारी दी गई। साथ ही संस्थान की वनस्पति वाटिका, पॉटरहिल, समरहिल एवं संस्थान की मॉडल नर्सरी बड़ागांव का भ्रमण भी करवाया गया।डॉ. केएस कपूर, डॉ. संदीप शर्मा, डॉ. राजेश शर्मा, डॉ. अश्वनी टपवाल, डॉ. विनीत जिष्टू, डॉ. रणजीत कुमार व डॉ. पवन राणा ने ने भी विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया।

एचएफआरआई में कार्यशाला के दौरान प्रतिभागी चर्चा करते हुए।

दिव्य हिमाचल दिसम्बर 18, 2016

शिमला में वर्मीकंपोस्ट बनाने की दी ट्रेनिंग

दिव्य हिमाचल ब्यूरो, शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा बंजर भूमि की पुन:स्थापन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शनिवार को संपन्न हो गया। समापन डा. वीपी तिवारी, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रदेश सरकार के प्रमुख विभागों जैसे शिक्षण संस्थानों, वन विभाग के लगभग 20 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। इस संस्थान द्वारा समय-समय पर पर्यावरण से जुड़े अहम मुद्दों पर कार्यशालाएं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दौरान सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए और आगे के कार्यक्रमों के लिए प्रतिक्रिया और सुझाव भी प्राप्त किए गए। प्रशिक्षणार्थियों को संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों डा. संदीप शर्मा, डा.राजेश शर्मा, डा.अश्वनी टपवाल, डा.विनीत जिष्टू, डा. रणजीत व डा.पवन राणा द्वारा वानिकी से जुड़े विभिन्न पहलुओं जैसे नर्सरी की स्थापना, जैविक कृषि कंपोस्ट एवं वर्मीकंपोस्ट बनाने की विधियां, अनुवांशिकी व वृक्ष नस्ल सुधार के मूलभूत सिद्धांत तथा पुन:स्थापन एवं प्रदूषण उन्मूलन के लिए उपयुक्त पौध प्रजातियों के बारे में प्रस्तुतीकरण द्वारा अवगत करवाया।

हिमाचल दस्तक दिसम्बर 18, 2016

भू-संसाधनों पर बढ़ रहा जनसंख्या का दबाव

शिमला। भूमि संसाधनों पर जनसंख्या का दबाव बढ़ रहा है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने यह जानकारी दी। डॉ. आरके वर्मा ने कहा कि उपलब्ध भूमि संसाधनों पर लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण अत्याधिक दबाव है। कार्यक्रम में प्रदेश सरकार के प्रमुख विभागों जैसे शिक्षण संस्थानों, वन विभाग तथा ग्रामीण विकास से 20 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. आरके वर्मा ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रशिक्षण के दौरान सरल प्रस्तुतिकरण के माध्यम से विविध प्रकार की वैज्ञानिक जानकारी दी जाएगी।

पंजाब केसरी दिसम्बर 18, 2016

हिमाचल में 56 प्रतिशत भूमि बंजर

शिमला, 17 दिसम्बर (प्रीति): हिमाचल प्रदेश की 56 प्रतिशत भूमि बंजर पड़ी है यानी प्रदेश के 55,673 वर्ग किलोमीटर में से 31,659 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र बेकार पड़ा है। इनमें से अधिकतर क्षेत्रों में पेड़ पौधे भी नहीं हैं। इसके अलावा कुछेक ऐसे क्षेत्र हैं जो भू-स्खलन होने के बाद बंजर पड़े हुए हैं। बंजर भूमि पर वन अनुसंधान द्वारा करवाई गई कार्यशाला में विशेषज्ञों ने इस पर जानकारी देते हुए बताया कि भारत देश में 175 मिलियन हैक्टेयर भूमि बंजर पड़ी है जबकि हिमाचल में 31,659 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र बंजर है। बंजर भूमि की उपजाऊ बनाने को लेकर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित 3 दिवसीय कार्यशाला का शनिवार को समापन हुआ। इस मौके पर प्रशिक्षणार्थियों को पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन, बहुउद्देश्यीय पौधों, नर्सरी व वनों के कीट तथा उनके प्रबंधन के संबंध में जानकारी दी गई।

****